|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 16. März 2025 | | |
| **2. Fastensonntag C** | | |
| Erste Lesung: Gen 15,5-12.17-18; Zweite Lesung: Phil 3,17-4,1 oder 3,20-4,1; Evangelium: Lk 9,28b-36 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 745, 1!+2 | Herr, du kamst uns zu erlösen |
|  | GL 142, 1+2 | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  | GL 277, 1+2+4 | Aus tiefer Not |
|  | GL 283, 1-4 | Aus der Tiefe rufe ich |
|  | GL 638, 1-4 | Nun ist sie da, die rechte Zeit |
|  |  |  |
| Bußlied oder | GL 137 | Herr, erbarme dich |
| Kyrie: | GL 163, 4 | Herr Jesus, du rufst die Menschen |
|  | GL 481, 1+2+6! | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 27,1.7-9.13-14 |  |
|  | Kehrvers: GL 38, 1 | Der Herr ist mein Licht |
|  | Kehrvers: GL 365 | Meine Hoffnung |
|  | Oder |  |
|  | GL 435, 1+2 | Herr, ich bin dein Eigentum |
|  |  |  |
| Ruf v. d. Evangelium: | Ruf: GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 | |
|  |  | |
|  | *Aus der leuchtenden Wolke rief die Stimme des Vaters:* | |
|  | *Das ist mein geliebter Sohn; auf ihn sollt ihr hören.* | |
|  |  | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 177 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 363, 1-3 | Herr, nimm auch uns zum Tabor mit |
|  | (Alternativmelodie: GL 375) |  |
|  | GL 742, 1+2 | Zum Altare sieh uns treten |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 138 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 139 | Lamm Gottes |
|  | GL 497, 7 | Jesus, den verborgen |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 364, 1+3+5 | Schönster, Herr Jesu |
|  | GL 372, 1+3+6 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  | GL 361, 1-3 | Mein schönste Zier |
|  | GL 377, 1+2 | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  | GL 427, 2! | Bei dir, Herr, ist des Lebens Quell |
|  |  |  |
| Schlussslied: | GL 429, 1+2+5 | Gott wohnt in einem Lichte |
|  | GL 216, 1!+2 | Im Frieden dein |